॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेदों की ओर लौटो।

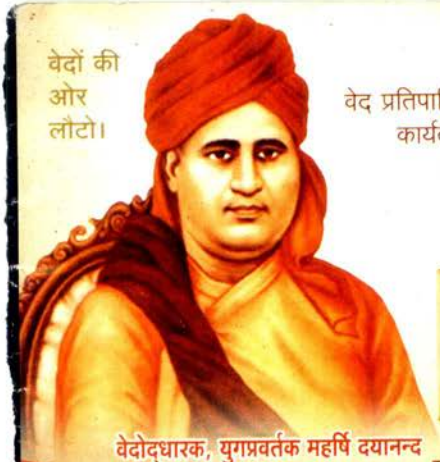

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

वर्ष १७ अंक ७ १० जुलाई २०१७

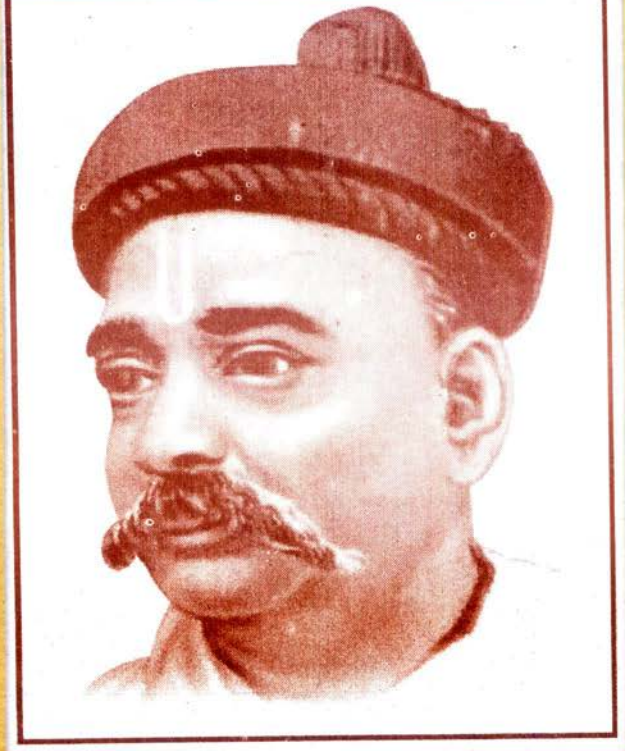

'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, इसे मैं लेके रहूँगा...'

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

जयंती व स्मृतिदिवस पर विनम्र अभिवादन !

कन्या आर्य वैदिक संस्कार शिविर (दि.२ से ९ मई २०१७), औरंगाबाद

शिविर का ध्वजारोहण कर उद्घाटन करते हुए पूर्व केन्द्रीय राज्यमन्त्री श्री जयसिंगरावजी गायकवाड पाटील। साथ में हैं मुख्य प्रशिक्षक आचार्य पं.धर्मवीरजी आर्य, दिल्ली एवं संयोजक डॉ.लक्ष्मण माने ।

मार्गदर्शन करते हुए श्री गायकवाडजी पाटील ।

प्रशिक्षण देते हुए आचार्य श्री धर्मवीरजी तथा साथ में हैं प्रधान श्री रमेशजी ठाकूर एवं आर्य भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंहजी चौहान।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११८ | कलि संवत् ५११८ | विक्रम संवत् २०७४
दयानन्दाब्द १९४ | आषाढ | १० जुलाई २०१७

प्रधान सम्पादक
माधव के.देशपांडे
(९८२२२९५५४५)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि
(९४२१९५११९०४)

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक
प्रा.देवदत्त तुंगार(९३७२५४१७७७) **प्रा.ओमप्रकाश होलीकर**(९८८१२१५६१६),
प्रा.सत्यकाम पाठक(९९७०५६२३५६), **ज्ञानकुमार आर्य**(९६२३८४२२४०)

अनुक्रम

* हिन्दी विभाग *

१) श्रुतिसुगंध ४
२) क्या राष्ट्रपति की भी जाति होती है? (सम्पादकीय)..... ५
३) महामृत्युंजय मंत्र- एक विश्लेषण ७
४) लोकमान्य तिलक की प्रखर राष्ट्रभक्ति..... १०
५) राज्यस्तरीय श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रम १२
६) धर्मयुद्ध का मैं सिपाही ! (काव्यसुधा) १८

* मराठी विभाग *

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी १९
२) श्रावणी- एक संकल्प पर्व २०
३) पूर्णत्वाकडे नेणारी 'श्रावणी पौर्णिमा'..... २५
४) वार्ताविशेष ३०
५) शोकवार्ता ३३
६) म.हा.प्र.सभेचे उपक्रम ३४

* प्रकाशक *
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

* मुद्रक *
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रु.१००/-
आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगंध

कौन लोग दुःख के पार होते है?

अश्मन्वती रीयते सं रभध्वमुत्तिष्ठत प्र तरता सखायः।
अत्रा जहीमोऽशिवा ये असंशिवान्वयमुत्तरेमाभि वाजान्।।(यजु.३५/१०)

पदार्थान्वय– हे**(सखायः)** मित्रो! जो **(अश्मन्वती)** बहुत मेघों वा पत्थरोंवाली सृष्टि वा नदी प्रवाह से**(रीयते)** चलती है, उसके साथ जैसे**(वयम्)** हम लोग**(ये)** जो**(अत्र)**इस जगत् में वा समय में**(अशिवाः)** अकल्याणकारी**(असन्)**हैं, उनको**(जहीमः)** छोडते हैं तथा**(शिवान्)** सुखकारी**(वाजान्)** अत्युत्तम अन्नादि के भागों को **(अभि, उत्, तरेम)** सब ओर से पार करें अर्थात् भोग चुकें वैसे तुम लोग **(संरभध्वम्)** सम्यक् आरम्भ करो **(उत्तिष्ठत)** उद्यत होओ और**(प्रतरत)** दुःखों का उल्लंघन करो।

भावार्थ – ज़ो मनुष्य बडी नौका से समुद्र के जैसे पार हों वैसे अशुभ आचरणों और दुष्ट जनों के पार हो। प्रयत्न के साथ उद्यमी होके मंगलकारी आचरण करें व सहजता से दुःखसागर के पार होवें।

सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि। (अथर्व-१/१/४)

(हे ईश्वर ! हम जो कुछ वेदवचन सुनें, उससे संयुक्त हो जाये। वह वेदज्ञान हमारे जीवन का अंश बन जाय तथा जो कुछ सुने, उससे हमें वियुक्त मत करो।)

वेद स्वाध्याय, चिन्तन व मनन पर्व तथा जीवन को
आध्यात्मिक पथ पर ले जानेवाले

श्रावणी उपाकर्म (वेदप्रचार) पर्व एवं

भारतीय स्वतन्त्रता दिवस

(१५ अगस्त २०१७)
के पावन उपलक्ष्य में

सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं !

संपादकीयम् क्या राष्ट्रपति की भी जाति होती है ?

आज सर्वाधिक प्रचलन यदि किसी बात का हो, तो वह है 'सम्प्रदाय व जाति' का! सवा सौ करोड की जनसंख्यावाले इस देश में हर मौसम में छोटे-बडे चुनाव होते रहते हैं और फिर उसके लिए आश्रय लिया जाता है मजहब व जाति प्रथा का ! या यूं कहिये कि इसी घृणित परम्परा पर ही आज सारा देश चल रहा है। सबसे क्लेशदायक विषय है कि एक ओर सरकार जातिप्रथा निर्मूलन के लिए प्रयत्न करती हैं, तो दूसरी ओर इसी के आधारपर आरक्षणादि सुविधाएं भी देती है और देश में चुनाव भी कराती है। जब नेताओं का चयन ही मत(धर्म) व जाति को प्रमाण मानकर किया जाता हो, तब देश से इस प्रथा को जड से समाप्त करना स्वप्नसा होगा! शैक्षिक योग्यता, आदर्श व्यक्तित्त्व, उसकी प्रतिभा, सामाजिक व राष्ट्रीय कार्य में योगदान, राजनीतिक कार्य की ऊंचाई आदि बातों को देखा जाना उचित है, किन्तु इन बातों की ओर कम और उसकी जन्मना मनुष्यकृत जाति या मजहब की ओर अधिक ध्यान दिया जाता हो, तो वह अक्षम्य है। यहाँ तो मजहब व जातिवाले लोगों को ही चुनाव में खडा कर उन्हें जीतवाया जाता है। इसके लिए फिर जनता में भी खुले आम प्रचार भी संकीर्ण ही होता है। ऐसे कारनामों पर न्यायालय ने भले ही कठोर शिक्षा का प्रावधान किया हो, लेकिन जनता में जाति-सम्प्रदाय का जहर इतना फैल गया है कि, अब बिना इसके देश की राजनीति चल ही नहीं सकेगी।

इस समय देश के सर्वोच्च राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव हो रहे हैं। खेद का विषय है कि, ये भी चुनाव जाति के आधार पर हो रहा है। संवैधानिक दृष्टि सबसे ऊंचें पद के लिए भी जाति का मुद्दा सामने आया और केंद्र की मोदी सरकारने व विरोधी दल ने भी इसी को आधार बनाकर इस पद के लिए अपने-अपने उम्मीदवार खडे किये।

वस्तुतः देश का प्रमुख पद सभी प्रकार की संकीर्णताओं से दूर होता है। मजहब, जाति, पार्टी, प्रान्त आदि भेदभावों से सर्वथा विमुक्त रहकर सभी को अपनानेवाला तथा किसी भी विवादित परिस्थिति में भी सुस्थिर रहनेवाला समर्थ राष्ट्रपति ही उस देश का गौरवस्थान माना जाता है। लेकिन आज सत्ताधिकारी भाजपा दल ने श्री रामनाथजी कोविन्द नामक अनजाने व्यक्ति को राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार घोषित किया और उनकी जाति दलित व पिछडी होने की भी सूचना दी। (सम्भवतः यह मासिक अंक मिलने तक श्री कोविंदजी देश के चौदहवें राष्ट्रपति निर्वाचित हो चुके होंगें!) श्री कोविन्दजी बिहार के राज्यपाल रह चुके हैं तथा इससे पूर्व वे दो बार राज्यसभा के सदस्य पद पर रहें

हैं। दिल्ली उच्च न्यायालय ने केन्द्र सरकार के प्रतिनिधि के रुप में भी उन्होंने कार्य किया। जानेमाने विधिज्ञ के रुप में पहचाने जानेवाले श्री कोविन्दजी का व्यक्तित्व भले ही शालीन, सुसंस्कृत, विवादमुक्त, निष्कलंक आदि गुणों से युक्त है, किन्तु राजनीति में विशेषतः भाजपा में उनसे भी बडी योग्यता, गुणवत्ता व ऊंचाई को छूनेवाले अनुभवी नेतागण होते हुए भी केवल 'दलित' जाति का होने के कारण कोविन्दजी को राष्ट्रपति बनाया जाता हो, तो यह एक तरह से संवैधानिक तथा मानवीय मूल्यों का अवमान है। इसके पीछे दलित राजनीति का खेल मोदी व शहा खेल रहे हो, तो वह भी गलत है। वैसे तो भारतीय राजनीति में राष्ट्रपति को भले ही केवल मुहर मारनेवाला या हस्ताक्षर करनेवाला सर्वोच्च व्यक्ति माना जाता है। किन्तु इस व्यक्ति की गरिमा सर्वोत्तम होती है। इस पद पर उसी व्यक्ति को पहुँचना चाहिए, जो केवल मानवता के सिद्धान्तों को अपनाते हुए सर्वकल्याण का विचार रखता हो। साथ ही वह सभी संकीर्णताओं से दूर रहता हो। इन सभी बातों को पिछली सरकारों ने दुर्लक्षित किया है।

राष्ट्रपति पद के लिए कुछ संकेतों का प्रावधान होता है। जिसमें सर्वप्रथम वह व्यक्ति राजनीति से अलिप्त होनी चाहिए, दूसरा संकेत वह सम्प्रदाय व जाति से सर्वथा अलग हो। तीसरा संकेत यह कि इस पद का दुरुपयोग कोई भी सरकार या पार्टी अपनी राजनीतिक प्रतिमा को स्वच्छ बनाने हेतु न किया करे। इस प्रकार के विचारों से राष्ट्र समृद्ध तथा बलशाली बनता है। दुर्भाग्य से कई अपवादों को छोडकर आजतक के कई राष्ट्रपतियों का चयन उपरोक्त संकेतों को पैरोंतले कुचलकर ही हुआ है। श्री कोविन्दजी को राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाकर मोदी सरकार व भाजपा नेताओं ने भी वही किया है, जो पिछली काँग्रेसादि सरकारों ने किया। इससे स्वयं मोदी सरकार की प्रतिमा भी कुछ अंशों में मलिन होती दिखाई दे रही है। शायद दलित चेहरा सामने लाकर उन्हें देश में घट रही दलित अत्याचारों की घटनाओं से सरकार की धूमिल बनती प्रतिमा को सुधारना होगा। या फिर अपने ही अन्दरुनी प्रतिद्वंद्वियों को शान्त करना अथवा अपनी हिन्दुत्व की विचारधारा को अधिक उदात्त बनाना हो। चाहे कुछ भी हो लेकिन जाति-पाति का यह खेल खत्म होना चाहिए। इससे हमारा देश कभी उन्नति नहीं कर सकेगा। हमारी वैदिक संस्कृति केवल एक मानवधर्म, एक मानवजाति, एक ईश्वर, एक उपासना पद्धति व एकसमान जीवनशैली का प्रतिपादन करती है, जिससे यह भारत देश समग्र विश्व का गुरु, मार्गदर्शक व शक्तिसम्पन्न राष्ट्र बन सकेगा। लेकिन सम्प्रदाय व जाति को लेकर देश में राजनीति बढती रहेगी, तो यह राष्ट्र कभी भी उन्नत हो नहीं सकेगा।

■■■

– नयनकुमार आचार्य

महामृत्युंजय मंत्र- एक विश्लेषण

– मधुरेन्द्रकुमार चौधरी

गायत्री मंत्र के बाद आर्य समाज तथा पौराणिक लोगों में वेदों के किसी मंत्र की सबसे अधिक चर्चा होती है, तो वह है 'महामृत्युंजय मंत्र'। समाज में प्रचलित अनुष्ठान व जाप करना आदि बातें इसके प्रमाण हैं । आइये, जाने कि यह मंत्र क्या कहता है? क्योंकि महर्षि दयानंद के अनुसार मन्त्रों के अर्थ को जाने बिना इसका जाप करने से कोई फल प्राप्त नहीं होता है । मन्त्रों के अर्थ को समझकर उसका जीवन में प्रयोग करने से ही उसका सही फल प्राप्त होता है । मंत्र इस प्रकार से है –

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।। (ऋ.७/५९/१२)

इसके ऋषि वसिष्ठ व देवता रुद्र हैं। इस मंत्र में परमेश्वर कहते हैं–(हे मनुष्य!) **त्र्यम्बकं यजामहे** (तू सदैव तीनों कालों में एकरस रहनेवाले ज्ञान की स्तुति किया कर।) **सुगधिम् पुष्टिवर्धनम्** (क्योंकि वह तेरे यश और बल को बढानेवाला है।) तथा **उर्वारुकमिव बन्धनात् मुक्षीय** (खरबूजा जिस प्रकार अपने बंधनों से मुक्त हो जाता हैं ।) **मृत्योः मुक्षीय** (तू भी मृत्यु से तो छूट जायेगा।) **मा अमृतात्** (परन्तु अमरता से नहीं छूटेगा।)

अब प्रश्न है कि तीनों काल में एकरस रहनेवाला या यूं कहें कि, एक समान रहनेवाला ज्ञान कौन सा हैं? जो कभी न बदलें। क्योंकि अधिकतर हम देखते हैं कि, हमारे जीवन के मूल्य काल के अनुसार बदल रहे हैं । उदाहरण के रुप में किसी काल में हमारा जीवन सूर्य के चक्र के अनुसार होता था। दिन भर कार्य करना और रात में सोना । परन्तु आज हमें निशाचर बनना पडता है। क्योंकि हर उन्नत समाज का कार्यकलाप रातभर चलता रहता है । जिसके कारण लोगों को रात्रि का जागरण आवश्यक हो जाता है, जिसके फलस्वरुप उन्हें दिन में सोना पडता है । यह समय की मांग है । अत: हमें वह विचार तलाशना पडेगा, जो कभी किसी काल में न बदलें । और वह विचार है 'बिना कर्म किये कुछ प्राप्त नहीं हो सकता ।' यह नियम हर काल में एवं हर परिस्थिति में खरा उतरता है। कर्मठ बन कर ही

मनुष्य उन्नति पा सकता है । तथा कर्म के द्वारा ही मनुष्य यश और बल प्राप्त करता है। इसी को यजुर्वेद में बताया है–

कुर्वन्नेवेह कर्माणि
जिजीविषेच्छत समाः।
एवं त्वयि नान्यऽथेतोऽस्ति
न कर्म लिप्यते नरे।। (यजु.४०/२)

अर्थात् – हे मनुष्य ! तू कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा कर । इस प्रकार कर्म के करने से तू कर्मों में लिप्त नहीं होगा, इसके अलावा अन्य कोई मार्ग नहीं है । तथा ऋग्वेद में कहा है –

इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि
मैषां नु गादपरो अर्थमेतम् ।
शतं जीवन्तु शरदः
पुरुचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन ।।
(ऋ.१०/१८/४)

अर्थात् – 'हे मनुष्य ! मैने जीवों को जीने के लिए कर्म मर्यादा की सीमा को स्थापित किया है। अतएव इस संसार में कर्म किये बिना कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। अतः निश्चय ही इस मर्यादा से मत हट! इसे तू दृढता से धारण कर, जिससे तू सौ या उससे भी अधिक जीवन को उत्साहपूर्वक जी सकेगा।' अथर्ववेद में स्पष्ट शब्दों में संकेत मिलता है –

कृतं में दक्षिणे हस्ते
जयो मे सव्य आहितः ।
गोजिद् भूयासमश्वजिद्
धनंजयो हिरण्यजित् ।।

अर्थात् – 'हे मनुष्य ! तरे दाहिने हाथ में कर्म और बायें हाथ में विजय पताका है । अगर तू ऐसा करेगा, तो तू ऐश्वर्यशाली बनेगा।' जब हम कर्म करने लगते हैं, तभी **'न कर्म लिप्यते नरे'** कर्म में लिप्त नहीं होंगें, ऐसा परमेश्वर का कथन हैं। अथवा खरबूजे के समान हम बंधनों से छूट जायेंगें अर्थात् मृत्यू से छूट जायेंगें।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह कि मृत्यु से छूटने का अर्थ क्या हैं ? क्योंकि मृत्यु से छूटने का अर्थ साधारण भाषा में तो अमर हो जाना है और जब अमर हो गये, तो अमरता से न छूटने का प्रश्न ही कहाँ उठता है ? अतः हमें मृत्यु को समझना होगा ।

वैसे तो साधारण शब्दों में मृत्यु अर्थात् आत्मा का शरीर से अलग होना है तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्मा को अजर व अमर तथा शरीर को मरणधर्मा कहा गया है । परन्तु क्या वास्तव में

ऐसा है ? एक तरफ तो हम कहते हैं कि शरीर पंचतत्वों में विलीन हो जाता है। पंचतत्व भी तो प्रकृति का ही एक अंग है, जो अजर व अमर है, फिर शरीर मरणधर्मा कैसे हुआ? इस प्रकार तो शरीर भी अजर-अमर है, उसका तो केवल रुप परिवर्तन होता है। जैसे आत्मा भी तो कईं तरह के शरीर को धारण करता है । अगर हम शरीर को मरण धर्मा मान लें, तो यज्ञ में डाली गयी आहुतियाँ का विनाश भी मानना पडेगा । और यह भी मानना पडेगा कि, परमेश्वर ने संसार को अपने सामर्थ्य से बिना किसी द्रव्य के बनाया है। अत: हमें मृत्यु शब्द पर विचार करना होगा ।

मृत्यु का दूसरा नाम 'काल' भी है और 'काल' समय को भी कहते हैं। हम यह भी जानते है कि समय का रुप परिवर्तन भी नहीं होता अर्थात् वह लौटकर कभी नहीं आता है । अत: मृत्यु तो सिर्फ समय की ही होती है। अत: अर्थ हुआ-

हे मनुष्य ! तू भूतकाल से तो छूट जाय, परन्तु अमरता अर्थात् वर्तमान से कभी न छूटें । अर्थात् वर्तमान में जो कर्म करना है, उस पर से तेरा ध्यान कभी न हटे, क्योंकि जो बीत गया वह लौट कर कभी न आवेगा।

खरबूजा भी डाल से छूटकर सुगन्धित और पुष्टिवर्धक हो जाता है, जिससे दूसरे जीवन आकर्षित होकर उसको खावें और बलवान बनें तथा उसके बीजों को इधर-उधर बिखेर देंवें, जिससे नये खरबूजों का जन्म हो। प्रभु कहते हैं, 'हे मनुष्य ! तू भी कर्म को ऐसे कर, जो सुगन्धित हो अर्थात् तेरा यश चारों तरफ फैले व तुझे बल अर्थात् आत्मविश्वास बढानेवाले बनें । जब कि हम करते इसके विपरीत हैं, या तो भूतकाल में जीते रहते हैं या भविष्य की कल्पनाओं में खोये रहते हैं, फलस्वरुप वर्तमान भी हमारे हाथ से निकल जाता है ।

इस प्रकार हम पाते है कि हर एक वेदमंत्र सार्वभौमिक है। जो इसका पालन करेगा, वह उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगा तथा जो इसका उल्लंघन करेगा, वह अन्धकार में खो जायेगा।

हे प्रभु ! हमें वेदमन्त्रों को समझने की शक्ति प्रदान कर और हमें वेदस्वाध्यायी बनावें ।

– 'रामायण', प्लॉट नं.९, सर्वे नं.९९/२, शिवपुर, कन्हालारोड, भुसावल जि.जलगांव
मो.७५८८४०१७४१

जयंती दिवस (२३ जुलाई) एवं स्मृतिदिवस (१ अगस्त) पर

राष्ट्रप्रेम का एक प्रेरक प्रसंग...

लोकमान्य तिलक की प्रखर राष्ट्रभक्ति

– पं.शिवकुमार शास्त्री(पूर्व सांसद)

हजारों बलिदानों के बाद भारत की यह स्वाधीनता हमें मिली है। लोकमान्य तिलक के जीवन की एक घटना का उल्लेख किये बिना नहीं रहा जाता ।

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक को भारत से निर्वासित करते हुए मांडले की जेल में उन्हें बन्द कर दिया गया। 'गीतारहस्य' नाम की अमर कृति उसी जेल में लिखी गई । जब वे मांडले की जेल में थे, तभी इधर भारत में उनकी पत्नी सत्यभामा की ५५ वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई। भारत के तार द्वारा यह दुःखद समाचार मांडले के जेलर को भेजा गया । मांडले का जेलर तिलक की विद्वत्ता और आचार-व्यवहार की पवित्रता को देखकर उनका श्रद्धालु भक्त बन गया था। उस तार को पढकर उसे आघात लगा और अपने मन में निश्चय किया कि इस दुःखद समाचार को देने के लिए मुझे स्वयं जाना चाहिए; उनके दुःखी हृदय को सांत्वना के दो शब्द कहकर धैर्य भी बँधाना चाहिए ।

जेलर तार का कागज हाथ में पकडे तिलक के कमरे पर पहुँचा । तिलक अपने ग्रन्थ के लेखन में व्यस्त थे। जेलर ने तिलक का अभिवादन करके तार का कागज उनके आगे रख दिया । तिलक ने उसे पढा और उल्टा करके सामने की पुस्तक पर रख दिया । तिलक गम्भीर और निस्तब्ध भाव से बैठे रहे । जेलर का अनुमान था कि देश से निर्वासित होने से ही तिलक का हृदय खिन्न है और उसपर भी जीवनसाथी का वियोग एक वज्रपात के समान होगा। इस स्थिति में वे बहुत दुःखी और विह्वल होंगें, तों मैं उनको सान्त्वना के लिए दो शब्द कहूँगा । किन्तु वहाँ दृश्य ही कुछ और था !

जेलर ने आश्चर्य से तिलक की ओर देखकर पूछा– 'आपने इस तार को पढा है ?' तिलक ने शान्त भाव से उत्तर दिया – 'हाँ, मैंने देख लिया है।' जेलर

ने कहा, 'इसमें आपकी पत्नी की मृत्यु का दु:खद समाचार है।' तिलक ने उत्तर दिया, 'हाँ, यही बात है।' जेलर ने कहा, 'मैने अपने जीवन में आप-जैसा कठोर व्यक्ति नहीं देखा, जिसकी आँखों से अपनी पत्नी मरने पर दो आँसू भी न गिरे।' जेलर के शब्दों ने तिलक को झकझोर डाला । तिलक ने कहा -'मेरे सम्बन्ध में तुम्हारी यह धारणा मेरे साथ न्याय नहीं है । मैं भी संसार के दूसरे गृहस्थियों के समान ही अपनी पत्नी से अनुराग रखता था। इस संसार से उसकी विदाई मेरे लिए अति दारुण और दु:खदायी है। किन्तु उसके इस वियोग के अवसर पर आँसुओं का न गिरना हृदय की कठोरता नहीं है, अपितु जेलर ! वास्तव में बात यह है कि मेरी आँखो में जितने भी आँसू थे, उन्हें मैं भारतमाता की दु:खद अवस्था पर बहा चुका हूँ । अब मेरी आँखों में कोई आँसू नहीं रहा, जो मेरी पत्नी के मरने पर निकलकर बाहर आता।'

मातृभूमि के प्रति कितनी भावप्रवणता है ! तिलकजी के हृदय का चित्र खींचना, हो तो एक उर्दू शायर के शब्दों में कहा जा सकता है -

गम तो हो हद से सिवा,
अश्क-अफशानी न हो ।
उससे पूछो जिसका घर जलता हो,
और पानी न हो ।।

(लेखक की प्रसिद्ध कृति 'श्रुति-सौरभ' से साभार)

छपते-छपते

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति
डॉ.धर्मपालजी का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान एवं गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति तथा अनेकों आर्य संस्थाओं के मार्गदर्शक डॉ.श्री धर्मपालजी आर्य का दि.९ जुलाई २०१७ को प्रात: निधन हो गया। वे लगभग ७६ वर्ष के थे। वे अत्यंत मृदुभाषी, लेखक, कुशल वक्ता एवं आर्य समाजों को नेतृत्व प्रदान करने की अद्भुत कला के धनी थे। आर्य संदेश इस पत्रिका का संपादन भी आपने कुशलता के साथ किया। उनके पार्थिवपर पूर्ण वैदिक रीति से अंतिम संस्कार किये गए।

स्व.श्री धर्मपालजी को महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की भावपूर्ण श्रद्धांजली!

॥ ओ३म् ॥

स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां मा प्रमदितव्यम्।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्यसमाज परली वैजनाथ जि.बीड

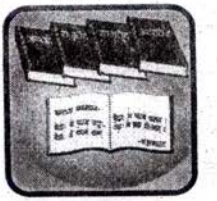

मानव जीवन कल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियान-२०१७

(श्रावणी उपाकर्म पर्व- वेद प्रचार माह)
दि.२४ जुलाई से २१ अगस्त २०१७

राज्यस्तरीय कार्यक्रम

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
पं.शिवकुमारजी शास्त्री (वैदिक विद्वान) सहारनपुर(उ.प्र.) एवं पं.प्रदीपजी आर्य फरीदाबाद(हरि.)	आर्य समाज, सम्भाजीनगर(औ.बाद)	२४ से २७ जुलाई २०१७
	आर्य समाज, गारखेडा, औ.बाद	२८ से ३० जुलाई २०१७
	आर्य समाज,परली-वै. जि.बीड	१ से ७ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, गांधी चौक, लातूर	८ से १४ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, सोलापुर	१५ से २१ अगस्त २०१७
पं.महेन्द्रपालजी आर्य (वैदिक विद्वान) दिल्ली एवं पं.वेदवीरजी आर्य (आर्य भजनोपदेशक) कोलकाता	आर्य समाज, जालना	२४,२५ जुलाई २०१७
	आर्य समाज, परभणी	२६ से ३० जुलाई २०१७
	आर्य समाज, नांदेड	३१ जुलाई से १ अगस्त १७
	आर्य समाज, देगलुर	२ से ८ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, शहापुर ता.देगलूर	९, १० अगस्त २०१७
	आर्य समाज, मुदखेड	११ से १४ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, धर्माबाद	१५ से २० अगस्त २०१७
पं.ब्रिजेशजी शास्त्री (वैदिक विद्वान) गाजियाबाद एवं पं.स्वामी अमलानन्दजी सरस्वती (आर्य भजनोपदेशक) मथुरा(उ.प्र.)	आर्य समाज, रेणापुर	२४ से २८ जुलाई २०१७
	आर्य समाज, रामनगर, लातूर	२९ जुलाई से ४ अगस्त १७
	आर्य समाज, शिवणखेड ता.चाकुर	५ से ९ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, किल्लेधारुर	१० से १६ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, अंजनडोह	१७ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, केज	१८ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, अंबाजोगाई	१९ से २१ अगस्त २०१७
आचार्य शिवकुमारजी, वै.विद्वान,दिल्ली	आर्य समाज, माजलगांव जि.बीड	२६ से २८ जुलाई २०१७

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
पं.धर्ममुनिजी क्रान्तिकारी	आर्य समाज, उमरगा	२४ से २६ जुलाई २०१७
(वै.विद्वान)कानपुर(उ.प्र.)	आर्य समाज, औराद-गुंजोटी	२७, २८ जुलाई २०१७
एवं	आर्य समाज, गुंजोटी	२९ जुलाई से २ अगस्त १७
पं.सन्दीपजी वैदिक	आर्य समाज, निलंगा	३ से ७ अगस्त २०१७
(आर्य भजनोपदेशक)	आर्य समाज, औराद शहाजानी	८ से १४ अगस्त २०१७
सहारनपुर(उ.प्र.)	आर्य समाज, उदगीर	१५ से २१ अगस्त २०१७
पं.चन्द्रपालजी शास्त्री	आर्य समाज, वारजे मालवाडी, पुणे	२४ से २७ जुलाई २०१७
(वै.विद्वान)गाजियाबाद(उ.प्र.)	आर्य समाज, नानापेठ, पुणे	२८ से ३१ जुलाई २०१७
एवं पं.कर्मवीरजी आर्य	आर्य समाज, पिंपरी, पुणे	१ से ७ अगस्त १७
(आर्य भजनोपदेशक)	आर्य समाज, अहमदनगर	८ अगस्त २०१७
मुजफ्फरनगर(उ.प्र)		
आचार्य डॉ.कमलनारायण आर्य	आर्य समाज, देवळाली कॅम्प,नाशिक	८, ९ अगस्त २०१७
(वै. विद्वान) रायपुर(छ.ग.)	आर्य समाज, भगुर, नाशिक	१० से १२ अगस्त २०१७
एवं पं.कर्मवीरजी आर्य	आर्य समाज, पंचवटी, नाशिक	१३, १४ अगस्त २०१७
(आर्य भजनोपदेशक)	आर्य समाज, कुमारनगर , धुलिया	१५ से २१ अगस्त २०१७
पं.जयेन्द्रजी शास्त्री	आर्य समाज, हिंगोली	२४ से २६ जुलाई २०१७
(वैदिक विद्वान)भुवनेश्वर	आर्य समाज, आखाडा बाळापुर	२७, २८ जुलाई २०१७
(उडीसा)एवं	आर्य समाज, घोडा ता.कळमनुरी	२९ जुलाई २०१७
पं.देवेन्द्रजी आर्य	आर्य समाज, जरोडा ता.कळमनुरी	३० जुलाई २०१७
(आर्य भजनोपदेशक) मुंबई	आर्य समाज, येहळगांव ता.हदगांव	३१ जुलाई,१ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, मरडगा ता.हदगाव	२ अगस्त २०१७
पं.आर्यमुनिजी	आर्य समाज, माटेगांव ता.हदगाव	३, ४ अगस्त २०१७
(२७ से ३१ जुलाई १७ तक)	आर्य समाज, तळणी ता.हदगाव	५ से ७ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, शिऊर ता.हदगाव	८ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, निवघा ता.हदगाव	९ से ११ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, हदगांव ता.हदगाव	१२ से १७ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, कंजारा ता.हदगाव	१८ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, तामसा ता.हदगाव	१९ से २१ अगस्त २०१७
पं.राजवीरजी शास्त्री	आर्य समाज, धाराशिव(उस्मानाबाद)	२४ से २६ जुलाई २०१७
(वैदिक विद्वान)सोलापुर एवं	आर्य समाज, तेरखेडा ता.जि.उ.बाद	२७ जुलाई २०१७
पं.अरुणकुमारजी सांगळे	आर्य समाज, कळंब	२९, ३० जुलाई २०१७
(आर्य भजनोपदेशक)	आर्य समाज, वाशी	३१ जुलाई से २ अगस्त १७
सोलापुर	आर्य समाज, ईट ता.वाशी	३ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, घाटपिंपरी ता.वाशी	४, ५ अगस्त २०१७

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
पं.सुधाकरजी शास्त्री (वैदिक विद्वान) पुणे एवं पं.प्रतापसिंहजी चौहान (आर्य भजनोपदेशक) उदगीर	आर्य समाज, बेदमंदिर, जलगांव	२४,२५ जुलाई २०१७
	आर्य समाज, मंजुषा कॉलनी,जलगांव	२६,२७ जुलाई २०१७
	आर्य समाज,नशिराबाद ता.जि.जलगांव	२८,२९ जुलाई २०१७
	आर्य समाज, इदगांव ता.जि.जलगांव	३० जुलाई २०१७
	आर्य समाज, भुसावळ	३१ जुलाई २०१७
	आर्य समाज, सटाना नाका, मालेगांव	१ से ३ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, लोहारा ता.उदगीर	११ से १३ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, करडखेल ता.उदगीर	१४ से १६ अगस्त २०१७
	आर्य समाज,अजनी ता.शि.अनंतपाळ	१८ से २० अगस्त २०१७
पं.सदाशिवरावजी जगताप (वैदिक विद्वान) वाशी एवं पं.प्रतापसिंहजी चौहान (आर्य भजनोपदेशक) उदगीर	आर्य समाज, गिरवली ता.वाशी	६ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, चांदवड ता.वाशी	७ अगस्त २०१७
	आर्य समाज,अंजनसोंडा ता.परंडा	८ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, मानेवाडी ता.जि.बीड	९ अगस्त २०१७
पं.शेरसिंहजी शास्त्री, लातूर पं.ज्ञानकुमारजी आर्य, लातूर	आर्य समाज, गांजुर ता.चाकुर	१९ अगस्त २०१७
	आर्य समांज, सुगाव ता.चाकुर	२० अगस्त २०१७
पं.तातेरावजी जगताप पं.हरिओमजी कराळे (वै.विद्वान)जानापूर(कर्ना.)	आर्य समाज, अंबुलगा ता.निलंगा	२, ३ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, हनुमंतवाडी ता.निलंगा	४, ५ अगस्त २०१७
	आर्य समाज,कासार शिरसीता.निलंगा	६, ७ अगस्त २०१७
प्रा.चन्द्रेश्वरजी शास्त्री प्रा.ओमप्रकाशजी विद्यालंकार (होळीकर)वै.विद्वान,लातूर	आर्य समाज, उजेड	२९, ३० जुलाई २०१७
	आर्य समाज, बिबराळ	१, २ अगस्त २०१७
पं.संतोषजी आर्य (वैदिक विद्वान) जालना एवं पं.आर्यमुनिजी (आर्य भजनोपदेशक)हदगांव	आर्य समाज, मदनसुरी	१, २ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, येलमवाडी	३, ४ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, हलगरा	५, ६ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, बोटकूळ	७, ८ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, कासार बालकुंदा	९, १० अगस्त २०१७
	आर्य समाज, सय्यद अकुलगा	११,१२ अगस्त २०१७
डॉ.प्रकाशजी कच्छवा, औराद श. पं.वैजनाथअप्पा करकेले, औराद श.	आर्य समाज, बडूर	१५, १६ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, नदीवाडी	१७, १८ अगस्त २०१७

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
पं.वशिष्टजी आर्य	आर्य समाज, टाका ता.औसा	२७, २८ जुलाई २०१७
(वैदिक विद्वान)अंबाजोगाई	आर्य समाज, बेलकुंड ता.औसा	२९ जुलाई २०१७
पं.सोगाजी घुन्नर	आर्य समाज, रामेगांव ता.औसा	३०, ३१ जुलाई २०१७
(आर्य भजनोपदेशक)हदगांव	आर्य समाज, मोगरगा ता.औसा	१ से ३ अगस्त २०१७
पं.शिवाजी निकम	आर्य समाज, मंगरुळ ता.औसा	४, ५ अगस्त २०१७
(आर्य भजनोपदेशक)मोगरगा	आर्य समाज, किल्लारी ता.औसा	६ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, दैठणा ता.शि.अनंतपाळ	७ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, धनेगांव ता.उदगीर	८, ९ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, वलांडी ता.देवळी	१०, ११ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, टाकळी ता.उदगीर	१२, १३ अगस्त २०१७
पं.नारायणरावजी कुलकर्णी	आर्य समाज, येलदरी	८, ९ अगस्त २०१७
पं.यादवरावजी भांगे	आर्य समाज, अंधोरी	१०, ११ अगस्त २०१७
पं.अशोकरावजी कातपुरे	आर्य समाज, अहमदपूर	१२ अगस्त २०१७
वैदिक विद्वान, नांदेड	आर्य समाज, कंधार	१४ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, बाराहाळळी	१५, १६ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, मुखेड	१७ अगस्त २०१७
पं.श्री सोममुनिजी, परळी	आर्य समाज, बनसारोळा	४ अगस्त २०१७
पं.सत्येंद्रजी राऊत, अणदूर	आर्य समाज, शिराढोण	५, ६ अगस्त २०१७
पं.उद्धव घाडगे, बीड	आर्य समाज, बीड	७ अगस्त २०१७
पं.श्रीरामजी आर्य, लातूर	आर्य समाज, स्वा.सै.कॉलनी,लातूर	१२, १३ अगस्त २०१७
माता इंदुमती सावंत, लातूर	आर्य समाज, कव्हा ता.ज.लातूर	१९, २० अगस्त २०१७
पं.दयानन्द शास्त्री	आर्य समाज, मानवत	५,६ अगस्त २०१७
पं.दिगंबर देवकते	आर्य समाज, पूर्णा	१२, १३ अगस्त २०१७
वैदिक विद्वान, परभणी	आर्य समाज, कौसडी	२० अगस्त २०१७
पं.चन्द्रकांतजी वेदालंकार,हिंगोली	आर्य समाज, जिंतूर	१२, १३ अगस्त २०१७
प्राचार्य देवदत्तजी तुंगार,नांदेड	आर्य समाज, किनवट	१२ अगस्त २०१७
पं.गणपतरावजी कदम,नांदेड	आर्य समाज, उमरी	१३ अगस्त २०१७
पं.विश्वनाथजी शास्त्री	आर्य समाज, ओम सोसायटी,पुणे	१३ अगस्त २०१७
पं.गणेशजी आर्य	आर्य समाज, खडकी	१५ अगस्त २०१७
(वैदिक विद्वान, पुणे)	आर्य समाज, खडकवासला	१७ अगस्त २०१७
	आर्य समाज, मंचर	२० अगस्त २०१७

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
पं.स्वामी स.क्रान्तिवेशजी, घटांग्रा पं.योगिराजजी भारती,परळी	आर्य समाज, घटांग्रा आर्य समाज, राणी सावरगांव	६, ७ अगस्त २०१७ ८ अगस्त २०१७
प्रा.डॉ.चंद्रशेखरजी लोखंडे, लातूर	आर्य समाज, पानचिंचोली	१२, १३ अगस्त २०१७
प्रा.डॉ.वसुंधरादेवी गुडे, लातूर पं.कांचनदेवी शास्त्री, लातूर	आर्य समाज, होळी आर्य समाज, मुशिराबाद	१३ अगस्त २०१७ २० अगस्त २०१७
पं.माधवरावजी देशपांडे,पुणे पं.लखमसीभाई वेलानी,पुणे	आर्य समाज, कोल्हापुर आर्य समाज, इचलकरंजी	१२ अगस्त २०१७ १३ अगस्त २०१७
पं.माणिकरावजी टोम्पे,उदगीर पं.प्रकाशवीरजी आर्य,उदगीर	आर्य समाज, साकोळ ता.शिरुर अ.	५ से ७ अगस्त २०१७
प्रा.डॉ.अखिलेशजी शर्मा, धुलिया	आर्य समाज, आष्टे ता.जि.नंदुरबार	६ अगस्त २०१७
प्रा.डॉ.वीरेंद्रजी शास्त्री, परळी	आर्य समाज, हाळी ता.उदगीर	१२ से १४ अगस्त २०१७
प्रा.डॉ.नरेंद्रजी शिंदे(शास्त्री) प्रा.अर्जुनरावजी सोमवंशी, उदगीर	आर्य समाज, नेत्रगाव ता.उदगीर आर्य समाज, बोरुळ ता.उदगीर आर्य समाज, हेर ता.उदगीर	२९, ३० जुलाई २०१७ ५, ६ अगस्त २०१७ ७ अगस्त २०१७
पं.बालाप्रसादजी सोनी, सोलापूर पं.शंकररावजी विराजदार,सोलापूर	आर्य समाज, माडज ता.उमरगा	५, ६ अगस्त २०१७
पं.कर्णसिंहजी आर्य, माडज पं.विज्ञानमुनिजी, परळी	आर्य समाज, कदेर ता.उमरगा आर्य समाज, बेडगा ता.उमरगा आर्य समाज, मुरुम ता.उमरगा आर्य समाज, सास्तूर ता.उमरगा	१६, १७ अगस्त २०१७ १८ अगस्त २०१७ १९ अगस्त २०१७ २० अगस्त २०१७
प्रा.डॉ.अरुणजी चव्हाण,परळी-वै. पं.भागवतरावजी आघाव,परळी-वै.	आर्य समाज,घाटनांदुर ता.अंबाजोगाई	८ अगस्त २०१७
प्रा.लक्ष्मीकांतजी शास्त्री, माजलगांव पं.लक्ष्मणरावजी आर्य, परळी	आर्य समाज, गंगाखेड जि.परभणी	८ अगस्त २०१७
पं.तानाजी शास्त्री, परळी	आर्य समाज,सारडगांव ता.परळी-वै.	१७ अगस्त २०१७

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
पं.प्रशांतकुमारजी शास्त्री, परळी	आर्य समाज,मांडवा ता.परळी-वै.	१८ अगस्त २०१७
पं.व्यंकटरावजी कुले, शिवणखेड पं.विजयपालजी कुले, शिवणखेड	आर्य समाज,चाकूर जि.लातूर आर्य समाज,वडवळ नागनाथ जि.लातूर	१३ अगस्त २०१७ १७, १८ अगस्त २०१७

सभी आर्य समाजों व विद्वानों से निवेदन है कि, प्रदत्त तिथियों के अनुसार ही श्रावणी वेदप्रचार का कार्यक्रम आयोजित करें । इन कार्यक्रमों में किसी भी प्रकार का परिवर्तन न करते हुए श्रावणी उत्सव उत्साहपूर्वक मनावें । सभाद्वारा भेजे गये विद्वानों से ही कार्यक्रम लेवें, अन्य किसी संगठन द्वारा भेजें विद्वानों के कार्यक्रम न लेवें। वैदिक विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाकर समाज एवं राष्ट्र का कल्याण करने हेतु प्रयास करें । यदि कोई कठिनाई हो तो सभा के पदाधिकारियों से संपर्क करें ।

श्रावणी कार्यक्रमों की सफलता हेतु आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं !

-: विनीत :-

डॉ.ब्रह्ममुनि (प्रधान) **माधव के.देशपाण्डे** (मन्त्री) मो. ९८२२२९५५४५ **उग्रसेन राठौर** (कोषाध्यक्ष) **लक्ष्मण आर्य**-गुरूजी (वेदप्रचार अधिष्ठाता) मो. ९४२०२६९९२४

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, परली-वैजनाथ, जि.बीड (महाराष्ट्र)

चलो म्यांमार (ब्रह्मदेश)...!

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमार(ब्रह्मदेश)

दि.६, ७ व ८ अक्तूबर २०१७/स्थान श्री अंबिका मन्दिर परिसर मांडले

आर्यजनों को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि, अनेकों अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों की सफलता के पश्चात् इस वर्ष ऐतिहासिक भूमि ब्रह्मदेश(बर्मा, म्यांमार) के मांडले शहर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न होने जा रहा है। इस महासम्मेलन में आर्यजगत् के अनेकों विद्वान्, सन्यासी, नेता, कार्यकर्त्ता सम्मिलित हो रहे हैं। विभिन्न सम्मेलनों का भी इस समारोह में आयोजन किया गया है।

अतः आप सभी से निवेदन है कि, अधिक से अधिक आर्यजन इस महासम्मेलन में सम्मिलित होवें। व्यवस्थापन समिति के सदस्य सर्वश्री अरुण प्रकाश वर्मा, श्री शिवकुमार मदान, श्री एस.पी.सिंह आदि से मो.९५४००४०३२४ पर सम्पर्क करें।

काव्यसुधा

धर्मयुद्ध का मैं सिपाही!

कवि- सुरेशगीर 'सागर' (लातूर) मो.९४०५००६२७१

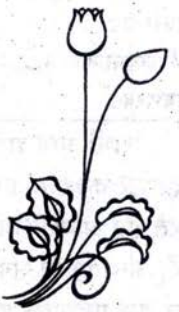

न हिन्दू न मुसलमान, न सिख न मैं ईसाई हूँ ।
वैदिक धर्मी आर्य मैं, ऋषि दयानन्द का अनुयायी हूँ ।।धृ।।
न नास्तिक न पाखंडी कर्मकांडी, न मूर्तिपूजक हूँ ।
वेदोंपर विश्वास मेरा निराकार ईश्वर का उपासक हूँ ।।
संध्या हवन की सुगंध, सत्यार्थप्रकाश की रोशनाई हूँ ।
वैदिक धर्मी आर्य मैं ..... ।।१।।

ईश्वरीय व्यवस्थानुसार ही आचार-विचार व्यवहार रखता हूँ ।
जैसे मुझे वैसे ही प्राणिमात्र को जीने का अधिकार रखता हूँ ।।
मनुष्य योनि में जन्मा शाकाहारी हूँ न बेरहम कसाई हूँ ।
वैदिक धर्मी आर्य मैं ..... ।।२।।

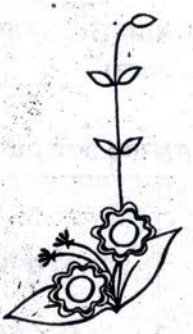

समयोचित करने योग्य कर्तव्य सारा धर्म कहलाता ।
जो चाहूँ मैं, ओ औरों को देना धर्म का मर्म कहलाता।।
स्वयं सुखी होने हेतु चाहता मैं सबकी भलाई हूँ ।
वैदिक धर्मी आर्य मैं ..... ।।३।।
न जन्नत कहीं ऊपर, न दोजख कहीं नीचे भ्रम है सारा।
धरती पर ही बनाओ स्वर्ग, बनाके संस्कारी परिवार हमारा ।।
बुद्धि विवेक से जो जानूं, वो मानूं वैदिक पथ का ही राही हूँ ।
वैदिक धर्मी आर्य मैं ..... ।।४।।
सदाचारी समाजहितकारी राष्ट्रभक्त पनपतें आर्यसमाज में ।
विश्वशांति हेतु 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के नारे गूंजते आर्य समाज में ।
अधर्म को मिटाने का संकल्प 'सागर' धर्मयुद्ध का सिपाही हूँ ।
वैदिक धर्मी आर्य मैं ..... ।।५।।

॥ओ३म्॥

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद संदेश — मूढ लोकांची अवस्था

अविद्यायामन्तरे वर्त्तमानाः स्वयन्धीरा पण्डितम्मन्यमानाः।
दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथाऽन्धाः।।

जे अविद्या व अज्ञान-अंध:कारात किचपत पडलेले असतात आणि जे स्वत:ला धीर व विवेकशील समजतात. त्याचबरोबर स्वत:लांच बुद्धीमान (मीच ज्ञानी) समजत पुन्हा-पुन्हा कुटिल(वाईट) आचरण करतात. असे मूढ बुद्धीचे (कर्तव्यहीन) लोक ज्याप्रमाणे आंधळा माणूस इतर आंधळ्या माणसांकडून(खड्ड्यात) नेली जातात. त्याप्रमाणे या जगात मूढ माणसे अज्ञानाच्या दरीत कोसळतात.(कठोपनिषद-२/५)

दयानंद वाणी — पुराण समीक्षा !

पुराणातील बहुतेक गोष्टी खोट्या आहेत. पण घुणाक्षरन्यायाने एखादी गोष्ट खरीही आहे. जी एखादी गोष्ट खरी आहे, ती वेदादी सत्यशास्त्रांतून घडलेली आहे. आणि ज्या गोष्टी खोट्या आहेत त्या भटाभिक्षुकांनी रचलेल्या आहेत. उदाहरणार्थ, शिवपुराणामध्ये शैवांनी शिवाला परमेश्वर मानून विष्णू, ब्रह्मा, इंद्र, गणेश, सूर्य इत्यादिकांना शिवाचे दास ठरविले आहे. वैष्णवांनी आपल्या विष्णुपुराणात विष्णूला परमात्मा मानून शिवादिकांना विष्णूचे सेवक बनविले. देवी भागवतात देवीला परमेश्वरी आणि शिव, विष्णू वगैरेना तिचे नोकर बनविण्यात आले. गणेश पुराणात गणपतीला ईश्वर व इतर सर्वांना त्याचे दास बनविले आहे. या साऱ्या गोष्टी या सांप्रदायिकांनी नव्हे तर कोणी केल्या ? ही सारी पुराणे एकाच माणसाने रचली असती तर त्यात अशा परस्परविरोधी गोष्टी आल्या नसत्या. ती विद्वानांनी लिहिली असती तर अशा विचित्र गोष्टी त्यात मुळीच आल्या नसत्या. यांपैकी एका पुराणातील गोष्ट खरी मानावी, तर दुसऱ्या पुराणातील गोष्ट खोटी ठरते. दुसऱ्या पुराणातील गोष्ट खरी मानावी, तर तिसऱ्या पुराणातील गोष्ट खोटी ठरते आणि तिसऱ्या पुराणातील गोष्ट खरी मानावी तर इतर सगळ्या पुराणांतल्या गोष्टी खोट्या ठरतात.

(सत्यार्थप्रकाश-११ वा समुल्लास)

'श्रावणी'- एक संकल्प पर्व

– लक्ष्मण आर्य–गुरुजी

श्रावण मास म्हटलं की, आनंदाचा महिना ! चोहीकडे आनंदाचं वातावरण. सृष्टी जणू हिरवा शालू नेसून नटलेली असते. शेते हिरवीगार पिकांनी सजलेली, तर अनेक फुलझाडे फुललेली असतात. खळखळ झरे वाहतात. प्रदुषणांची घाणच जणू दूर वाहून नेतात. निर्मळ झऱ्याचे विलोभनीय दृश्य मनाला भुरळ घातल्याशिवाय राहत नाही. ऊन-पावसाचा खेळ चालू असतो.तेंव्हा ओठावर या ओळी आपोआप येतात- 'जिकडे-तिकडे पाणीच पाणी खळखळणारे झरे। लवलवणारे गवत पोपटी लवलवणारे तुरे।।' तसेच मन स्वच्छंदपणे गाऊ लागते- 'आला-आला वारा, सगे पावसाच्या धारा', किंवा मुखात कवितेचे बोल सहजच येऊ लागतात-'श्रावणात घननीळा बरसला, बरसे अमृत धारा।।'

अशा आनंदी वातावरणात मन प्रफुल्लीत होतं. आषाढाच्या घोर पावसाने पृथ्वीवरील घाण वाहून जाते. श्रावणात आषाढासारखा भेडसावणाणरा ढगांचा भयानक गडगडाट नसतो किंवा विजेचा जीवघेणा कडकडाट नसतो, तर ढगांनीही सौम्य रुप धारण करुन, विजांचा सुखद लखलखाट बरोबर आणलेला असतो. यामुळे या आनंदी दिवसांचा आनंद वाढविलेला असतो. राना-वनाचं दृश्य तर अप्रतिम असतं. गुरं चारा खाऊन मस्त झालेली असतात. वासरं नाकात वारं भरुन बागडत असतात. बागडणाऱ्या वासरांना पाहून गाई हंबरतात. छे ! याचे वर्णन शब्दांनी करणे अशक्यच! परमेश्वरानं जणू जलवर्षावा बरोबर आनंदाची बरसातच केलेली असते.

या महिन्यातच सणावारांची रेलचेल असते. भारतीय संस्कृतीत अनेक पर्व साजरे केले जातात. प्रत्येक पर्वापासून कांही ना कांही शिकायला मिळते. या महिन्यात श्रियाळ षष्टी, नागपंचमी, रक्षाबंधन(श्रावणी), श्रीकृष्ण जयंती, पोळा इत्यादी प्रमुख सण येतात. भारतीय माणूस एवढा सहृदयी आहे की, तो माणसाशी तर सौहार्दाने वागतो यात नवल नाही, परंतु सापांसारख्या प्राण्यांना देखील विसरत नाही. जणू हा एक प्रकारे **बलिवैश्वदेव यज्ञच** करतो. पंचमीचा सण हा सासुरवाशीणी स्त्रियांसाठी आनंद देणारा असतो. नवीन लग्न झालेल्या

लेकींना माहेरी आणलं जातं. माहेरी आल्यावर सासरचा धाक नसतो. मैत्रिणी जमा होतात. गप्पा-गोष्टी करतात, गाणी गातात. भुलोबा भोवती फेर धरतात व अनेक आख्याने मुखपाठ गातात. ती गाणी ऐकताना प्रत्येक महिला जणू बहिणाबाईचं रुपच वाटते. हिंदोळे खेळतात व आंनदाचा मनमुराद आस्वाद घेतात. पोळा म्हणजे शेतकऱ्यांचा बैल, गाई इ. प्राण्याविषयी असलेल्या कृतज्ञेचा दिवस. त्या दिवशी बैलाकडून काम करुन घेतं नाहीत. त्यांना आंघोळ घालतात, तेल पाजतात, अंगावर रंगी-बेरंगी नक्षी काढली जाते. शिंगात खोबळे, वेगवेगळी कागदी फुले, गोंड, बाशिंग व पाठीवर सुंदर झूल घालून नटवतात. नंतर त्यांची मिरवणूक वाजत-गाजत काढतात. केवढी ही प्राण्याबद्दलची सहृदयता...?

या पारंपारिक सणांव्यतिरिक्त एक अनुपम तसाच जीवनातील अतिमोलाचा सण म्हणजे 'श्रावणी'. श्रावणी हे अति महत्वाचे, जीवनाला योग्य दिशा देणारे वैदिक पर्व ! यालाच संकल्प पर्व किंवा स्वाध्याय पर्व असेही म्हणतात. याचे पूर्ण नाव 'श्रावणी उपाकर्म' अर्थात् ऋषितर्पण आहे. या दिवसापासून वेदाचा स्वाध्याय केला जातो. श्रवण केले जाते. म्हणूनच त्याचे नाव श्रावणी पडले असावे. या पर्वापासून वेदाचा स्वाध्याय आरंभ होतो. म्हणून या पर्वाला **ऋषितर्पण** ही म्हणतात.

'स्वाध्यायेनार्चयेद् ऋषीन् ।।'

एके ठिकाणी स्मृतिकार लिहितात -

श्रावण्यां पौष्ठपद्यां
वाप्युपाकृत्य यथाविधि ।
युक्तश्छन्दांस्यधीयीत
मासान् विप्रोऽर्धपञ्चमान् ।।

अर्थात् ब्राह्मणादी वर्णांनी श्रावण पोर्णिमेपासून साडेचार महिने वेदाध्ययन करावे. या पर्वात यज्ञोपवीत बदलणे किंवा नूतन धारण करणे, ही परंपरा आहे. यज्ञोपवीत हे संकल्प सूत्र व विद्याध्ययनाचे चिन्ह आहे. मध्यंतरीच्या काळात केवळ रुढी म्हणून हे पर्व साजरे केले जाई. म.दयानंदांचे मानव जातीवर महान उपकार आहेत. त्यांनी जनजागृती करुन वैदिक मान्यतांचे पुनरुज्जीवन केले व पर्वाचा खरा अर्थ उलगडून दाखवला. स्वाध्यायाचे महत्व ध्यानात ठेवावे.

स्वाध्यायान्मा प्रमदः ।
स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां
न प्रमदितव्यम् ।।

हे पर्व सत् ज्ञान, विद्या, विवेक

आणि धार्मिक बुद्धीच्या निश्चयासाठी आहे. परम प्रमाण वेदांचा स्वाध्याय म्हणजेच वेदपूजा ! धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष हे जीवनाचे चार पुरुषार्थ साधावयाचे असतील आणि बौद्धिक परिमार्जन करावयाचे असेल, तर वेदाध्ययनाशिवाय पर्याय नाही. वेदज्ञान सर्वप्रथम परमेश्वराने चार ऋषींना दिले. त्यांच्यापासून इतरांना ते ज्ञान श्रवणाने प्राप्त झाले म्हणून वेदाला 'श्रुती' ही म्हटले जाते.श्रवण, मनन, निदिध्यासन, आत्मसाक्षात्कार या साधनचतुष्टयात प्रथम 'श्रवण' चा क्रमांक येतो. ही महत्वाची पायरी आहे. म्हणूनच संतांनी म्हटले आहे- 'कानी जे पेरीले। नेत्री ते उगवले।।' जे ऐकले जाते, त्याचे संकल्पचित्र माणूस पाहत असतो. श्रवणीचे महत्व विशद करताना संत ज्ञानेश्वर ज्ञानेश्वरीच्या नवव्या अध्यायात म्हणतात- 'सर्व सुख पाहिजे असेल, तर लक्षपूर्वक ऐकले (श्रवण) पाहिजे.'

तरी एकले अवधान दिजे ।
मग सर्व सुखासि पात्र होईजे।
हे प्रतिज्ञोत्तर माझे ।
उघड आईका ।।

श्रवण करणारे इंद्रिय कान(कर्ण) होय. वेदशास्त्रात अनेक ठिकाणी कानाचे महत्व सांगितलेले आढळते.

'भद्रं कर्णेभिः श्रुणुयाम देवाः।

तसेच संत साहित्यात कानांनी काय ऐकू नये याचेही दिग्दर्शन आहे. **'आणिकाचे कानी । निंदा स्तुती मना नाणी।।'** म्हणून कानाने भद्रच ऐकावे!

जीवन एक यज्ञ आहे. प्रत्येक इंद्रिय जीवन यज्ञाचे साधन बनावे. हे वेदश्रवणानेच घडू शक्ते. मंत्र ऐकल्यानेच अनेकांचे जीवन बदलून गेले आहे. नारदाचा उपदेश ऐकून वाल्याचा वाल्मिकी झाला. साधारण अमीचंद नावाचा माणूस देखील भक्त अमीचंद बनला. महर्षी दयानंदाचे एक वाक्य ऐकल्याने त्याच्यावर इतका चांगला परिणाम झाला. अंगुलीमाल बुद्धाच्या उपदेशाने बदलला. श्रवण हे विद्या ग्रहणाचे प्रवेशद्वार आहे. त्याचा वापर यज्ञीय भावनेनेच करणे योग्य होय. कानांनी जसे ऐकतो, तसे विचार तरंग उठत असतात. शाहीराचे पोवाडे ऐकले की बाहू फडफडतात! वात्सल्य व करुण रसाची कविता ऐकली की डोळे पाणावतात. त्यामुळे योग्य तेच कानांनी ऐकावे व अभद्र ऐकणे टाळावे.

पूर्वीच्या काळी ऋषि-मुनी

पावसाळ्यात जंगल सोडून नगराजवळ येत. नगरातील लोकांनाही या काळात कामातून उसंत असते. त्यामुळे चार महिने चातुर्मास पर्वाचे आयोजन केले जाई. मोठे यज्ञ होत असत. वेदकथांचे आयोजन केले जाई. ते श्रावणी पर्वापासूनच ! कारण श्रावणी पर्व म्हणजे वेदारंभ होय. गुरुकुलात ब्रह्मचाऱ्यांना प्रवेशही याच महिन्यात दिला जाई. यज्ञोपवीत संस्कार देखील याच दिवशी करीत. जीवनात यज्ञोपवीतसंस्कार अतिमहत्वाचा आहे. त्यामुळे जीवनाचा कायापालट होतो. माणूस द्विज बनतो. त्याचा दुसरा जन्म होतो. यज्ञोपवितातील तीन धागे १)पितृऋण २) देवऋण ३) ऋषिऋण याची आठवण देतात. दुसऱ्या दृष्टीने विचार केल्यास यज्ञोपवीताने आत्मिक, बौद्धिक व सांसारिक या तीन क्षेत्रात प्रवेश होतो.

आत्मिक क्षेत्रात विवेक, पवित्रता व शांती ही तत्त्वे आहेत. बौद्धिक क्षेत्रात साहस, स्थिरता, कर्तव्यनिष्ठा ह्या बाबी येतात. सांसारिक क्षेत्रात स्वास्थ्य, धन, सहयोग ही मुद्दे येतात. जो यज्ञोपवीताचा सखोल विचार करुन जीवनाची वाटचाल करतो, त्याचाच दुसरा जन्म (द्विज) होतो व तोच अभ्युदय व नि:श्रेयस् प्राप्त करु शक्तो. यज्ञोपवीत गुरु व यज्ञाच्या साक्षीने ब्रह्मचाऱ्यास देतात आणि स्वाध्यायाचा आरंभ करवितात. तसेच जीवनाच्या कल्याणासाठी शुभाशीर्वाद देतात. यज्ञामुळे वायुशुद्धी, जलशुद्धी व आरोग्य प्राप्त तर होतेच, परंतु संगठन शक्तीचे व आत्मिक उन्नतीचे संवर्धन होते. माणूस हा खरा माणूस बनतो व नंतर तो देवत्वाला प्राप्त होतो.

नंतरच्या काळात याच पर्वाला **'रक्षाबंधन'** असे संबोधले जाऊ लागले. बहीण भावाच्या प्रेमाचे प्रतिक म्हणून राखी बांधते व भाऊ तिच्या रक्षणाचे वचन देतो. अशा या पवित्र पर्वापासून आपण दुसऱ्या स्त्रियांना बहिणी समान मानण्याचे शिकले पाहिजे. या गोष्टीची सध्याच्या काळात जास्त गरज आहे. अनेक ठिकाणी मुली-महिलांवर अत्याचार होतात. ते ऐकून मन विषन्न होतं. मनात येऊन जातं 'हाच का शिवरायांचा देश? रामबंधू लक्ष्मणाचा देश? हीच काय म.दयांनदांची भूमी?

रामायण काळात एकच रावण होता. सध्या पावलोपावली रावण आहेत. त्यांच्याशी मुकाबला करण्यासाठी तेवढेच राम आवश्यक आहेत. मर्दानों उठा! श्रावणी पर्वाच्या पावन मुहूर्तावर

संकल्प करु या! मी असतांना रावणाची काय मजाल की, तो परस्त्रियांवर अत्याचार करील. अशा दुष्टांचा नायनाट करुन मला जगाला आर्य बनवायचं आहे तरच माझे जीवन सार्थ! नसता कीड्यामुंग्यांसारखे जीवन काय कामाचे? तुकाराम महाराज जे म्हणतात, ते खरेच आहे.–'नाही तरी काय थोडी। श्वान सुकटे बापुडी।।'

सारांश हाच की, श्रावणी पर्वाचे आपल्या जीवनात अनन्य साधारण महत्त्व आहे. जगावर उपकार करणे, हे आपले ध्येय आहे. शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नती करणे हा आर्य समाजाचा सहावा नियम सांगतो. त्यासाठी आरोग्य कसे राखावे? स्वत: व्यसनमुक्त होऊन इतरांना निर्व्यसनी बनवणे, प्राणायाम, ध्यान, धारणा, स्वाध्याय इत्यादींद्वारे आरोग्य व आत्मिक प्रगती कशी होईल? याचे उद्‌बोधन करणे आपले काम आहे. त्यासाठी आरोग्य शिबिरे, ध्यानयोग शिबिरांचे आयोजन करावे. सेवा, त्याग, परोपकार, बंधुभाव, समता, नैतिकता, देशभक्ती, प्रबोधन आदींच्या सहाय्याने समाज सुसंघटित करणे ह्या सर्व बाबी आपणांस वेद, उपनिषद्, सत्यार्थ प्रकाश इ.ग्रंथातून मिळतात.तर चला मग आजपासून या ग्रंथाचा स्वाध्याय करु या! 'वेदांचे शिकणे, शिकविणे आणि ऐकणे, ऐकविणे हे आपले परमकर्तव्य आहे.'हे पार पाडण्यासाठी आपण कटिबद्ध होऊ या! परमेश्वर आमच्या सत्कार्याला आशीर्वाद देवो, हीच प्रार्थना!

(लेखक महाराष्ट्र आर्य प्र.सभेचे वेदप्रचार अधिष्ठाता आहेत.)

– 'पंचप्रकाश', विद्यानगर,
परळी–वैजनाथ
मो.९४२०२६९९२४

राज्यस्तरीय पुरोहित प्रशिक्षण शिबिर उत्साहात

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे आर्य समाज परळीच्या पूर्ण सहकार्याने दि.२ ते ९ जुलै २०१७ दरम्यान राज्यस्तरीय पुरोहित प्रशिक्षण शिबिर उत्साहात संपन्न झाले. श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रम, परळी येथे पं.राजवीरजी शास्त्री यांच्या प्रमुख मार्गदर्शनाखाली आयोजित या शिबिरात जवळपास ३० शिबिरार्थी सहभागी झाले होते. सर्वांनी उत्तमरित्या या शिबिराचा लाभ घेतला.(विस्तृत वृत्त पुढील अंकात)

पूर्णत्वाकडे नेणारी-'श्रावणी पौर्णिमा'

– पं.राजवीर शास्त्री

श्रावणी पौर्णिमेला बहुतांश लोक नारळी पौर्णिमा व राखी पौर्णिमा म्हणूनच ओळखतात. परंतु आर्य जगतात हा दिवस **'श्रावणी उपाकर्म'** या नावाने साजरा केला जातो. 'श्रावणी उपाकर्म' हा वैदिक पर्व(सण) आहे. पर्व या शब्दाचे पूरक व पूर्णता असे अर्थ होतात. व्यक्ती व समाजाच्या पूर्ण उन्नती व विकासासाठी जे सण व उत्सव दिशादर्शक, सहाय्यक, पोषक, पूरक व प्रेरक ठरतात. त्या सण व उत्सवाला 'पर्व' असे म्हणतात. श्रावणी उपाकर्म हा सण 'पर्व' या शब्दाला साजेसा असाच आहे. हा सण श्रावणी पौर्णिमेदिवशी साजरा केला जातो. याचे औचित्य असे की 'श्रावणी उपाकर्मा' चा अंतिम उद्देश्य 'पौर्णिमा' या शब्दातून स्पष्ट होतो. ज्या दिवशी चंद्र आकाशात पूर्णपणे प्रकाशित होतो, त्या दिवसाला पौर्णिमा म्हणतात आणि पौर्णिमेचा हा पूर्ण चंद्र मानवाला हीच प्रेरणा देतो की, – 'हे मनुष्यांनो ! मी पूर्ण झालो. तुम्ही ही पूर्ण व्हा.' परमात्मा हा एकच आहे. परंतू विद्वान लोक त्याला अनेक नावाने ओळखतात. त्या अनेक नावांपैकी पौर्णिमा हे देखील परमात्म्याचे एक नाव आहे. कारण तो पूर्ण (मा) आहे. परमात्मा हा सर्वव्यापक, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान आहे. तो सर्व दृष्टीने पूर्ण आहे, परिपूर्ण आहे. म्हणून तो परितृप्त आहे. त्याच्या आनंद स्वरुपाचे रहस्य त्याच्या परिपूर्णतेत आहे, असे म्हणायला हरकत नाही. तात्पर्य असे की, पूर्णतेत पूर्ण सुख आहे, तर अपूर्णतेतच सुख-दु:खाचे मिश्रण आहे आणि आपल्याला दु:ख विरहित सुखाची अभिलाषा आहे. तेंव्हा अपूर्णतेकडून पूर्णत्वाकडे वाटचाल करणे अगत्याचे आहे. पौर्णिमेचा चंद्र पहा कसा हर्षमुखी झाला आहे? द्वितीयेच्या चंद्रकोरीवर एवढी कळा नव्हती, जेवढी आज त्याच्या मुखावर आली आहे. त्याची ज्योत्स्ना सर्वत्र पसरली आहे. त्यामुळे आकाश शोभिवंत झाला आहे. पृथ्वी विभावरी बनली आहे. त्याला झालेला आनंद गगनात मावेनासा झाला आहे. तो सर्वत्र ओसंडून वाहतो आहे.

यावरुन हेच स्पष्ट होते की जो पूर्ण आहे, तोच आनंदी असू शकतो आणि जो स्वत: आनंदी आहे, तोच इतरांना

आनंद देऊ शकतो. म्हणून पूर्ण होण्याचा ध्यास सर्वांनी घेतला पाहिजे. आत्मा हा एकदेशी आहे आणि तो अल्पज्ञ व अल्पशक्तियुक्त आहे. म्हणून त्याचा जन्मजन्मांतराचा प्रवास सुख-दु:ख मिश्रितच असला पाहिजे. अशी बळजबरी परमात्मा करीत नाही. आत्मा सुख-दु:खाच्या बाहेर जाऊन शाश्वत सुखाची प्राप्ती करुन घेऊ शकतो. ही स्वतंत्रता परमात्म्याने जीवात्म्याला दिली आहे. त्याच्या कल्याणासाठी दयाळू परमात्म्याने 'वरदा वेदमाता' प्रस्तुत केली आहे. ईश्वरीय ज्ञानाचे नाव 'वेद' आहे. हे ज्ञान मानवमात्रास वरदायक असे आहे. वेदातील ज्ञान-विज्ञान व उपदेश मानवमात्राच्या आचरणात यावेत व व्यवहारात उतरावेत, यासाठी आपल्या प्राचीन ऋषी-मुनींनी चार वर्ण व चार आश्रमांची आखणी व्यवस्थितपणे केली. तसेच पंचमहायज्ञ, सोळा संस्कार व वैदिक पर्व प्रचलित केले. वैदिक धर्म सोपा केला. अभ्युदय व नि:श्रेयस यांची सिद्धी पण सहज केली.

मनुष्यांची भटकंती संपावी व तो असत्याकडून सत्याकडे, अज्ञानाकडून ज्ञानाकडे, अविद्येकडून विद्येकडे, मृत्युकडून अमरतेकडे वाटचाल करणारा व्हावा. संसारी वृत्तीकडून निवृत्तीकडे वळावा. अपूर्णतेकडून पूर्णतेकडे प्रवृत्त व्हावा, यासाठीच ही सद्भावना सण व उत्सवांच्या नियोजनामागे दडली आहे.

'उपाकर्म' या शब्दाचा अर्थ आहे - जवळ घेऊन जाणे. अर्थात पालकाने आपल्या पाल्यास श्रुती (वेद) च्या शिक्षणासाठी आचार्याकडे नेऊन गुरुकुलात प्रविष्ट करणे होय. प्राचीन काळी श्रावणी पौर्णिमेपासून वेदाध्ययनास विधिवत् प्रारंभ होत असे. उपनयन संस्काराने वेदारंभ व्हायचा. याशिवाय गृहस्थाश्रमी लोकांसाठी उपाकर्म विधि सांगितली आहे. यादिवशी यज्ञविधिपूर्वक जुने यज्ञोपवीत उतरवून नूतन यज्ञोपवीत धारण केले जाते आणि श्रावण ते कार्तिक महिन्यापर्यंत वेदांचा कसून स्वाध्याय करण्याचे विधान आहे. श्रावणी पौर्णिमेच्या दिवशी जे नक्षत्र असते, त्याचे नाव आहे 'श्रवण'! श्रवण आणि श्रावण या शब्दांचा अर्थ आहे- ऐकणे व ऐकविणे आणि शिकणे व शिकविणे! या ठिकाणी श्रुती (वेदा) चेच ऐकणे व ऐकविणे आणि शिकणे व शिकविणे, असा अर्थ अभिप्रेत आहे. स्वामी दयानंदांनी याला परमधर्म म्हंटले आहे. कारण या परमधर्माचे पालन केल्याने व्यक्ती पूर्णत्वाला पोहोंचू शकते.

वेदाच्या स्वाध्यायाला पर्याय नाही. म्हणूनच श्रावणी पौर्णिमेदिवशी वेदाच्या स्वाध्यायाची मुहूर्तमेढ रोवावी लागते.

अमृतपुत्रांनो ! पर्व, पौर्णिमा किंवा पूर्णता या शब्दाने गोंधळून जाऊ नका. तुम्हाला वाटेल फक्त परमात्माच पूर्ण असू शकतो. जीवात्म्याला पूर्ण होणे शक्यच नाही. कितीही आणि कांहीही केले तरी आत्मा कधी परमात्मा बनू शकत नाही. हा विचार संभ्रम निर्माण करणारा आहे. हा निराशाजनक विचार असून तो पुरुषाला पुरुषार्थहीन बनविणारा आहे.

इथे चंद्राचेच उदाहरण घेऊ! चंद्र हा परप्रकाशित आहे. त्याचे अस्तित्व स्वयंप्रकाशित सूर्याच्या प्रकाशावर अवलंबून आहे. चंद्राला अमावस्येच्या दाट अंधारात आपले अस्तित्व गमावून बसण्याची इच्छा नाही. त्याला पौर्णिमेच्या आनंदाची अभिलाषा आहे. त्याने सूर्याचे शिष्यत्व पत्करले. त्याची उपासना सुरू केली. उपाकर्म आरंभ झाला. दिवसेंदिवस थोडया-थोड्या अंशाने तो स्वत:ला सूर्यासमोर घेऊन जाऊ लागतो. अमावस्येनंतर शुक्लपक्षरुपी सकारात्मकता फुलू लागते. द्वितीयेला चंद्राची कोर चमकते. पण तृतीया चतुर्थी असे करता-करता पंधराव्या दिवशी त्याच्या चिकाटीला व प्रयत्नाला पूर्ण यश प्राप्त होते. पूर्ण चंद्राच्या रुपात तो आकाशात झळकतो. तो अतिशय आनंदी होतो. त्याच्या आनंदाने निसर्गात ही आनंदाला भरती येते. त्याच्या शीतल व शुभ्र चांदण्याने वातावरण रसभरीत होतं. तो सर्वांना सूर्यापेक्षाही अधिक जवळचा वाटतो. 'चंदामामा' किंवा 'चांदूमामा' या संबोधनातून त्याची लोकप्रियता स्पष्ट होते. यातच त्या चंद्राची पूर्णता आहे. चंद्राची पूर्णता सूर्य बनण्यात नाही. तर चंद्राने पूर्णपणे विकसित व प्रकाशित होण्यात आहे. गुलाबाच्या कळीची पूर्णता पूर्णपणे उमलण्यात, विकसित गुलाबाचे फूल बनण्यात आहे. असेच आत्म्याच्या बाबतीतही समजावे. आत्म्याने परमात्मा बनण्याचे स्वप्न पाहणे वेडेपणाचे आहे. तसेच आत्मा कधी पूर्णत्वास पोहोंचू शकत नाही. म्हणून निराश व हताश बनून राहणे हा वेडेपणाच आहे. आत्म्याची उन्नती (आत्मोन्नती) हीच आत्म्याची पूर्णता म्हणायची. त्याच्या पूर्ततेसाठी परमात्म्याची भक्ती करणे गरजेचे आहे. आत्म्याला परमात्म्याच्या निकट घेऊन जाणे याचेच नाव **'उपाकर्म'**! स्वाध्याय धर्माच्या

बळावरच अल्पज्ञ आत्म्याला सर्वज्ञ परमात्म्याच्या पूर्णपणे सान्निध्यात जाणे शक्य आहे. याशिवाय दुसरा मार्ग नाही. जसे चंद्राला पूर्ण बनण्यासाठी पूर्वाभिमुख व्हावे लागले. तसे आत्म्यालाही पौर्वात्य संस्कृतीचा अर्थात वैदिक धर्माचा व वैदिक संस्कृतीचा अवलंब करावा लागेल. कारण पाश्चिमात्य संस्कृति ही धोक्याची आहे. कुणी तरी म्हटले आहे–

'युवकों का डिस्को डान्स देखकर,
संस्कृत का शिक्षक उब गया
और कहने लगा– सूरज भी
पश्चिम में ढला, तो डूब गया ।'

तेंव्हा नित्य, नियमित व श्रद्धापूर्वक वेद आणि वेदानुकूल ग्रंथाचा स्वाध्याय करणे, त्याचबरोबर स्वत:चेही अध्ययन करणे, आत्मनिरीक्षण करणे, आपल्या गुण–कर्म–स्वभावात काही त्रुटी अथवा दोष आढळल्यास त्यांना दूर करणे, दुरुस्त करणे, स्वत:ला दैवी संपतीने परिपूर्ण बनविणे, स्वत:ला परमात्म्याच्या मैत्रीस योग्य बनविणे यासाठी कराव्या लागणाऱ्या प्रयत्नाला पुरुषार्थ म्हणतात. पुरुषार्थाने पुरुष परमात्मा बनत नाही. परंतू तो महात्मा निश्चित बनतो. महापुरुष निश्चित बनतो. वेदाच्या स्वाध्यायाने मनुष्य विद्वान, धर्मात्मा व सदाचारी बनतो. सत्य, समता, दम, अमात्सर्य, क्षमा, लज्जा, तितिक्षा, त्याग, ध्यान, धैर्य, निरंतर दया व अहिंसा हे गुण अंगी येतात. प्रश्नोपनिषदकाराच्या मते जो ऋग्वेदाचा स्वाध्याय करतो, त्याला मनुष्य लोकांची प्राप्ती होते. पृथ्वीचे भोग व ऐश्वर्य मिळते. यजुर्वेदाच्या स्वाध्यायकर्त्याला चंद्रलोकाची प्राप्ती होते. सौम्य गुणांनी तो लाभान्वित होतो. सामवेदाच्या स्वाध्यायाने सूर्यलोक प्राप्त होतो. सूर्याप्रमाणे त्याचे जीवन तेजस्वी व महिमामय बनते आणि तिन्ही वेदाच्या उपदेशानुसार परमात्म्याची उपासना केल्यास त्याला परब्रह्माची प्राप्ती होते. सच्चिदानंद स्वरुपाचे दर्शन घडते. एकंदरीत स्वाध्यायाने शरीर, मन, बुद्धी व आत्म्याची मलिनता दूर होते. अंत:करण पवित्र बनते. त्याची सात्विकता, निर्मळता,पवित्रता ही त्याच्या वाणी व व्यवहारातून प्रकट व्हायला लागते. तो गोड व्यक्तिमत्वाचा धनी बनतो. तो लोकांचा आवडता बनतो. ही आध्यात्माची परिपक्वता आहे. आत्म्याची पूर्णता आहे. तेंव्हा श्रावणी पौर्णिमाला हातची व्यर्थ जाऊ देऊ नका, पकडून ठेवा आणि पूर्ण व्हा...!

निदान आर्यसमाजी लोकांनी तरी

याचा गांभीर्याने विचार करावा व परमधर्माचे पालन करावे. त्यामुळे स्वत:चे कल्याण तर होईलच, पण त्याचबरोबर जगावर उपकार करण्याचा आर्य समाजाचा मुख्य उद्देश्य ही साध्य होऊन तो सफल होईल. आर्य समाजी होणे म्हणजे जगावर उपकार करण्याची जबाबदारी खांद्यावर घेणे आहे आणि ही जबाबदारी तोच समर्थपणे पेलू शकतो, जो स्वत: स्वाध्यायशील आहे. श्रावणी उपाकर्म हा फक्त जानवे बदलण्याचा सण नाही, तर त्या सोबत आपले जीवनमानही बदलले पाहिजे. जसे यज्ञोपवीत अत्यंत पवित्र आहे, परमात्मा शुद्ध व पापरहित आहे. तसे आपले जीवनही निष्पाप बनले पाहिजे. अंत:करणाचा निर्मळ, स्वभावाने प्रेमळ व व्यवहारात सत्य-सरळ असलेल्या व्यक्तीचे जीवन दीर्घायुष्यी, बलयुक्त व तेजयुक्त बनते. त्यासाठी वेदाचे शुद्ध ज्ञान आत्मसात करावे लागते. श्रद्धा व निष्ठापूर्वक स्वाध्याय व सत्संगात रमावे लागते व वेदमय व्हावे लागते. जो वेदांचा(निकटचा) होत नाही, त्याच्या वेदना कमी होत नाहीत. श्रावणी उपाकर्म विधिमध्ये यज्ञोपवीत धारण करण्यामागे व यज्ञाहुती देण्यामागे हीच प्रेरणा दडलेली आहे. श्रावणी उपाकर्म साजरा करणे म्हणजे - सन्ध्या, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा व सत्कर्म करण्याच्या व्रतात स्वत:ला बांधून घेणे आहे. ही बांधीलकी न स्वीकारताच केवळ यज्ञोपवीत धारण करणे व यज्ञाहुती देणे म्हणजे - कवी गोपीनाथ शिवपुरकराच्या शब्दात असे सांगता येईल-

'भक्तीचे हे गाणे, माणूसकीला उणे,
रुढीचे तुणतुणे, धर्म माझा...'

आज सर्वत्र रुढीच्या तुणतुण्याचाच नाद आहे. बऱ्याच परिवारात आर्ष ग्रंथाचा दुष्काळ आहे. वैदिक ग्रंथालयाचा अभाव आहे. बरीचशी वाचनालये वाचकांभावी कपाटबंद आहेत. वैदिक सत्संग ओस पडताहेत. या सर्व उणिवा तुमच्या-आमच्यातील प्रमादीपणाची साक्ष देतात. तेंव्हा -

'औरों को अमृत देने का दम्भ नही अच्छा।
अपने मन का विष पच जाय तो काफी है।'

यावरुन हेच स्पष्ट होते की, जो पूर्ण आहे, तोच आनंदी असू शकतो आणि जो स्वत: आनंदी आहे, तोच इतरांना आंनद देऊ शकतो.

- आर्य समाज, बुधवार पेठ,
सोलापूर मो.९८२२९९००११

औरंगाबाद येथे कन्या संस्कार शिबिर उत्साहात

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या मार्गदर्शनाखाली आर्य समाज गारखेडा औरंगाबाद च्या वतीने दि.२ ते ९ मे २०१७ दरम्यान शहराच्या हर्सूल परिसरातील संत ज्ञानेश्वर वेद विद्या प्रतिष्ठाण येथे 'आर्य कन्या (आत्मरक्षा) वैदिक संस्कार शिबिर' उत्साहात संपन्न झाले. या शिबिरात १४ ते २२ वर्षे वयोगटातील जवळपास ८५ विद्यार्थिनी सहभागी झाल्या होत्या. शिबिराचे उद्घाटन माजी केंद्रीय राज्यमंत्री श्री जयसिंगरावजी गायकवाड पाटील यांच्या हस्ते झाले.

या शिबिरात दिल्लीहून आलेले प्रमुख प्रशिक्षक श्री आचार्य धर्मवीरजी आर्य व त्यांच्या सहकारिणी कु.सृष्टी आर्य, कु.दीपिका आर्य व कु.कीर्ती आर्य यांनी मुलींना आत्मसंरक्षणाचे प्रशिक्षण दिले. यात प्रामुख्याने शारीरिक व्यायाम, योगासने, कराटे, लाठी, भाला, सुरी, तलवार, रायफल आणि मल्लखांब शिकविण्यात आले. त्याबरोबरच मुलींचा बौद्धिक व आत्मिक विकास साधावा यासाठी वैदिक मानवतावाद, नैतिक संस्कार, ध्यान, आहार पद्धती, अंधश्रद्धा निर्मूलन, धर्म संस्कृती, वैदिक सिद्धांत, वर्ण व आश्रम पद्धती, वेद प्रतिपादित स्त्री जीवन, वर्तमान मत-पंथ व जाती निर्मुलन आदी विषयांवर तज्ज्ञ मार्गदर्शकांकडून प्रबोधन करण्यात आले. दररोज पहाटे ४.३० ते रात्रौ ९.३० पर्यंतच्या व्यस्त दिनचर्येत मुलींचा सर्वांगिण विकास साधावा, यासाठी प्रयत्न करण्यात आले.

शिबिरादरम्यान सर्वश्री प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य, प्रा.रमेश ठाकुर, आचार्य धर्मवीरजी, प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी, दत्ता मुळे, जगदीश सुर्यवंशी, ॲड.शिवाजीराव शिंदे, सुभाष वेदपाठक आदींनी मार्गदर्शन केले. भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंहजी चौहान यांनी मधुर भजने सादर करुन प्रेरणा दिली. सौ.सुमनताई चौहान यांनी यज्ञाचे पौरोहित्य केले. शिबिरकाळात सभेचे मंत्री श्री माधवराव देशपांडे यांनी सपत्निक भेट देऊन मुलींना मार्गदर्शन केले.

समारोपदिनी सकाळी शिबिर स्थळ ते हरसिद्धदेवी मंदिर, हर्सूल गाव या

भागात शिबिरार्थीनींची शोभायात्रा काढण्यात आली. यात तरुणींनी चौका-चौकात कवायती व लाठी, तलवार, रायफल यांची चित्तथरारक प्रात्यक्षिके सादर केली. शिबिराचा समारोप श्री जयसिंगराव गायकवाड यांच्या प्रमुख उपस्थितीत संपन्न झाला.

यावेळी त्यांनी आपल्या मार्गदर्शनपर भाषणात 'राष्ट्राची खरी शक्ती तरुण मुले व मुली असून त्यांना सुसंस्कारित करण्याच्या कार्यात आर्य समाज भरीव कामगिरी करीत आहे. मुलींसाठी आयोजित हे शिबिर निश्चितच नव्या भविष्यासाठी प्रेरणादायी सिद्ध होईल.' ते पुढे म्हणाले - 'खऱ्या अर्थाने मानवता हाच खरा धर्म असून युवतींनी वेदमार्गाचा अवलंब करुन आपल्या जीवनाचे सर्वकल्याण साधण्याचा प्रयत्न करावा. केवळ कर्मकांड म्हणजेच धर्म नव्हे तर धर्म हा आपल्या आचार-विचार व व्यवहारातून व्यक्त झाला पाहिजे.'

हे शिबिर यशस्वी करण्यासाठी सर्वश्री डॉ.लक्ष्मण माने, सौ.ज्योती तोष्णीवाल, सौ.अंजुताई माने, ॲड.जोगिंदरसिंह चौहान, ॲड.मिराताई बिराजदार, माजी पोलीस आयुक्त खुशहालचंद बाहेती, पं.दुर्गादास मुळे, नगरसेविका अंकिता विधाते आदींनी प्रयत्न केले.

शहापूरच्या संस्कार शिबिराला उत्तम प्रतिसाद

प्रांतीय सभेच्या वतीने शहापूर (ता.देगलूर जि.नांदेड) येथे स्थानिक आर्य समाजाच्या पूर्ण सहकार्याने दि.१० ते १६ मे २०१७ दरम्यान 'मानवता संस्कार व आर्यवीर दल शिबिर' अतिशय उत्साहात संपन्न झाले. गावातील जि.प. प्रशालेच्या इमारतीत आयोजित या शिबिरास प्रमुख मार्गदर्शक म्हणून दिल्ली येथील सार्वदेशिक आर्यवीर दलाचे प्रधान व प्रशिक्षक आचार्य श्री हरिसिंहजी आर्य यांना आमंत्रित करण्यात आले होते. शिबिराचे उद्घाटन आर्य समाजाचे प्रधान श्री गंगारेड्डी भूपतवार यांच्या हस्ते आर्यवीर दल ध्वज फडकावून करण्यात आले. शिबिरात श्री हरिसिंहजी आर्य यांनी मुलांना व्यायाम, योगासन, प्राणायाम, लाठी-काठी, विविध कवायती, कराटे आदींचे प्रशिक्षण दिले. तर वैदिक विद्वान सर्वश्री प्रा.नयनकुमार आचार्य; प्रा.अखिलेश शर्मा, प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी, लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी आदींनी विद्यार्थी जीवन

महत्त्व, ब्रह्मचर्य, वैदिक संस्कृती, आदर्श दिनचर्या, खानपान, मानवीय मूल्य, मातृ-पितृ सेवा, ईश्वराचे खरे स्वरूप आदी विषयांसह सामाजिक, राष्ट्रीय व नैतिक दृष्ट्या मौलिक मार्गदर्शन केले.

तसेच आर्य भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंहजी चौहान, पं.वैजनाथअप्पा करकेले यांनी विविध भजने गाऊन विद्यार्थ्यांमध्ये वातावरण निर्मिती केली. संयोजन कार्यात श्री वैजनाथराव हार्लिगे यांनी मोलाची भूमिका बजावली.

शिबिराचा समारोप शेतकरी संघटनेचे कार्यकर्ते व उच्च न्यायालयाच्या नागपूर खंडपीठाचे प्रसिद्ध विधिज्ञ ॲड.दिनेश शर्मा यांच्या प्रमुख उपस्थितीत व नांदेड जि.प.चे शिक्षण व आरोग्य सभापती माधवराव मिसाळे, रमेश पाटील हंगरगेकर यांच्या सानिध्यात संपन्न झाला.

हे शिबिर सफल करण्यासाठी प्रधान श्री गंगारेड्डी भूपतवार, मंत्री नरसारेड्डी वालावर, कोषाध्यक्ष हनमन्लू पुल्लागोर, सरपंच गंगारेड्डी कोटगिरे, माजी सरपंच विठ्ठलरेड्डी पुल्लागोर, डॉ.सुरेश पुल्लागोर, प्रा.तिरुपती रेड्डी इत्यादींनी मोलाचे सहकार्य केले. या शिबिरासाठी गावातून जवळपास ४० ते ५० हजार रुपयांचा निधी जमविण्यात आला होता.

६, ७, ८ ऑक्टोबरला मंडाले ब्रह्मदेशात

आंतर्राष्ट्रीय आर्य महासंमेलनाचे आयोजन

आध्यात्मिक व सामाजिक दृष्ट्या सुप्रसिद्ध अशा ब्रह्मदेशात (म्यानमार) येत्या ६, ७ व ८ ऑक्टोबर २०१७ रोजी आंतर्राष्ट्रीय आर्य महासंमेलनाचे भव्य स्वरुपात आयोजन होत आहे.

थोर देशभक्त लोकमान्य बाळ गंगाधर टिळक व इतर क्रांतिकारकांनी ज्या मंडाले येथील तुरुंगात काळ्या पाण्याची सजा भोगली. त्याच भूमीत हे संमेलन होत असल्याने महाराष्ट्रातील आर्यबांधवांच्या दृष्टीने ही समाधानकारक बाब आहे. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभेच्या मार्गदर्शनाखाली मंडालेच्या अंबिकामाता मंदिर परिसरात हे संमेलन घेतले जाणार आहे. या संमेलनासाठी प्रवास व्यवस्था ८ ते ९ दिवसांची असून एका व्यक्तीसाठी रु.१५,०००/- (रु.पंधरा हजार) खर्च येणार आहे. इच्छुकांनी व्यवस्थापक श्री एस.पी. सिंह ९५४००४०३२४ यांचेशी संपर्क करावा.

शोकवार्ता

प्रा.मारुतीराव चिद्री यांचे निधन

उदगीरच्या श्यामलाल स्मारक अभियांत्रिकी महाविद्यालयाचे पहिले प्राचार्य व राज्यातील विविध ठिकाणच्या तंत्रनिकेतन व अभियांत्रिकी महाविद्यालयांचे निवृत्त अधिव्याख्याते प्रा.श्री मारुतीराव मल्लप्पा चिद्री यांचे दि.१२ जुलै रोजी सकाळी लातूरच्या देशिकेंद्र शाळा परिसरातील राहत्या घरी हृदयविकाराने दु:खद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ८० वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या पश्चात् पत्नी ललितादेवी, दोन मुले प्रा.श्री विनय व उद्योजक श्री अभय, दोन मुली सौ.सुजाता बजरंग मदनसुरे, सौ.ऋता आनंद रायकर, दोन भाऊ श्री अर्जुन व श्री श्रावण, सुना व नातू-नाती असा परिवार आहे. स्व.श्री चिद्री हे पूज्य उत्तममुनिजींचे जावई होते.

बीदर (कर्नाटक) जवळील चिद्री या गावी जन्मलेल्या श्री चिद्री यांचे बालपण व शिक्षण अतिशय प्रतिकूल परिस्थितीतून झाले. अभियांत्रिकीचे शिक्षण पूर्ण केल्यानंतर त्यांनी जळगाव, कराड, लातूर, औरंगाबाद, मुंबई, अमरावती, उदगीर आणि उस्मानाबाद या ठिकाणी अध्यापन केले.

विद्यार्थी अवस्थेपासूनच ते मानवनिर्मित जातीभेद, अंधश्रद्धा व रुढी-परंपरा यांविरोधी होते.श्री राम मास्तर व उत्तम मुनिंजींच्या प्रेरणेने त्यांचा १९६१ साली आंतरजातीय विवाह झाला व ते आर्य समाजाकडे वळले. आपल्यासह आपले दोन्ही बंधु, मुला-मुलींचे व पुतणे-पुतणींचे आंतरजातीय विवाह घडवून त्यांनी समाजासमोर जात-पात निर्मूलनाचा आदर्श उभा केला आहे. अलिकडील कांही वर्षापासून ते अस्थमा आजाराने अस्वस्थ होते.

त्यांच्या पार्थिवावर रात्री ८वा. खाडगाव स्मशानभूमीत पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. सर्वश्री ॲड.जोगेंद्रसिंह चौहान, सभेचे उपप्रधान राजेंद्र दिवे, वैजनाथराव हालिंगे, किशनराव राऊत, नयनकुमार आचार्य आदींनी हा अंत्यविधी पार पाडला. तिसऱ्या दिवशी पं.वेदमुनिजी वेदालंकार यांच्या पौरोहित्याखाली परिवारात शांतियज्ञ संपन्न झाला.दिवंगत आत्म्यास सभेतर्फे भावपूर्ण श्रद्धांजली!

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. 333/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

दि.१० से १६ मई के दौरान शहापूर ता.देगलूर में आयोजित संस्कार शिविर के उद्घाटन अवसर पर आर्य समाज के पदाधिकारी, विद्वान व शिविरार्थी।

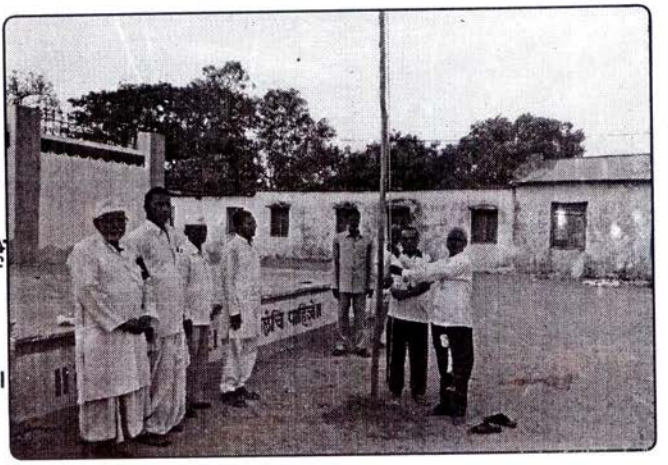

ध्वजारोहण करते हुए आर्य समाज शहापूर के प्रधान श्री गंगारेड्डी भूपतवार,आचार्य हरिसिंहजी। साथ में हैं सर्वश्री एनमन्लू पुल्लागोर, करकेले, हालिंगे, चौहान आदि।

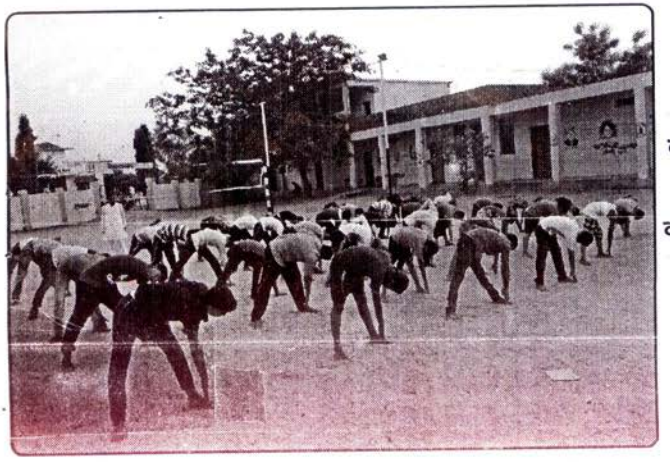

व्यायाम व योगासन का प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए शिविरार्थी।

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/18/2015-17

सेवा में,
श्री. _____

_____ _____ _____ _____

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

स्व.श्री.सदाशिवरावजी गुट्टे

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज, परली-वैजनाथ, जि.बीड
के दिवंगत वरिष्ठ कार्यकर्त्ता, भजनोपदेशक
तथा कट्टर वेदानुगामी व्यक्तित्व
स्व.श्री.सदाशिवरावजी पाटलोबा गुट्टे
के द्वितीय स्मृतिदिवस (७ जून २०१७) के उपलक्ष्य में
उनकी धर्मपत्नी **श्रीमती सुशीलाबाई गुट्टे व परिवार**
की ओर से **वैदिक गर्जना** मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट

जीवेत् शरदः शतम् !

श्रीमती सुशीलावाई गुट्टे